गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की मासिक पत्रिका; दिसम्बर, २०१९

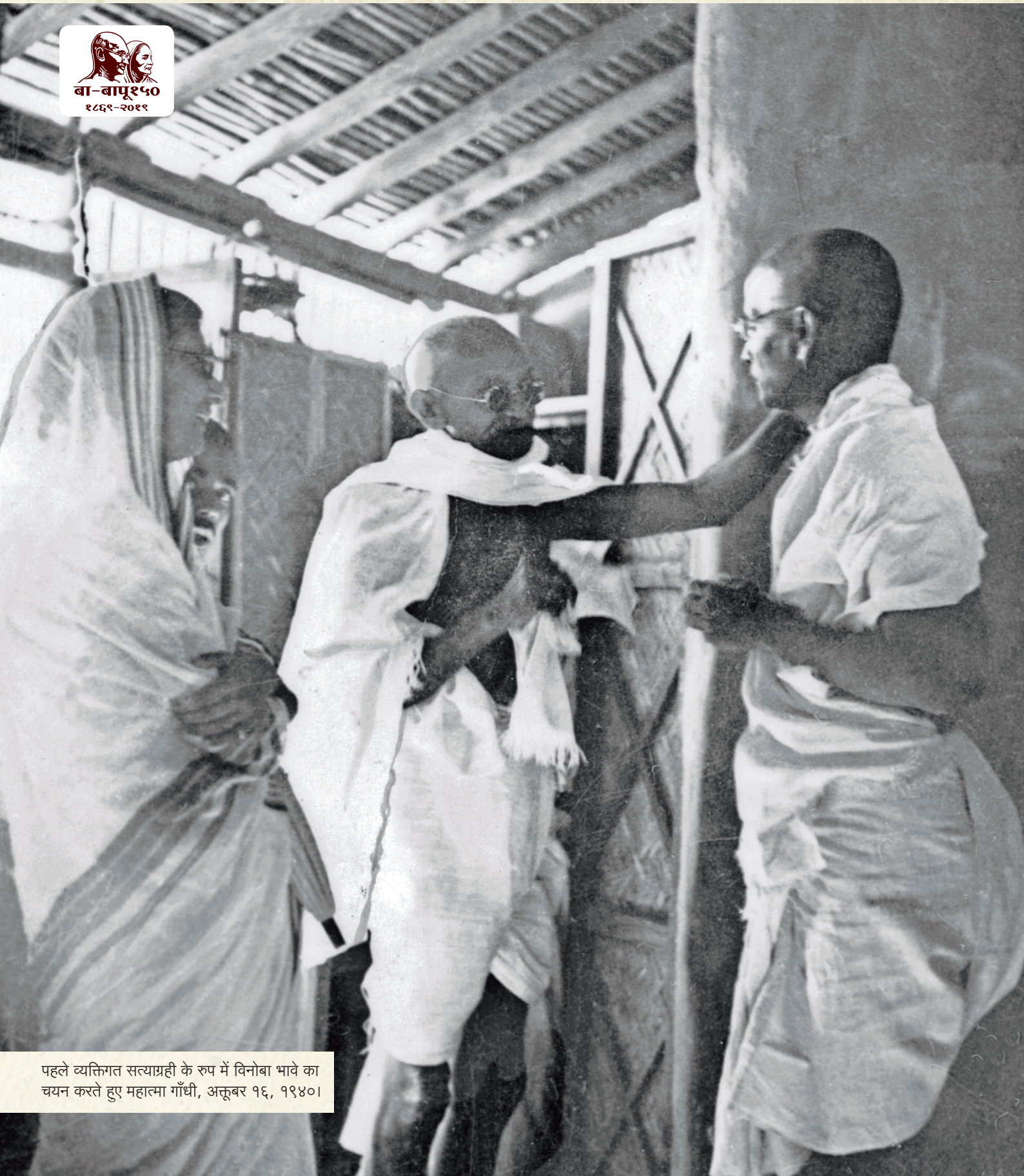

पहले व्यक्तिगत सत्याग्रही के रुप में विनोबा भावे का चयन करते हुए महात्मा गाँधी, अक्तूबर १६, १९४०।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित –

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष–१, अंक १० □ दिसम्बर, २०१९

अगर शुद्ध गुरुभक्ति न हो तो चरित्र–गठन नहीं हो सकता।

– महात्मा गाँधी

इस अंक में– .....पृष्ठ

संपादकीय .....

अधिक परेशानी १

विनोबा १२५.....३

Bhoodan: A New Taste of Nonviolent Revolution ४

Gitai: Vinobaji's 'Life-Breath' ६

विनोबा जी और महाराष्ट्र ७

आज की समाज रचना – *(डॉ. भवरलालजी जैन)* ८

फाउण्डेशन की गतिविधियां.....९–१३

संस्थापक

स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

प्रेरक

स्व. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक

अशोक जैन

संपादक

अश्विन झाला

संपादकीय मंडल

डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर–सज्जा

योगेश संधानसिवे एवं भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव – 425 001.

दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03,
मो. : 9404955272
फैक्स : 0257-2261133
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net
ई–मेल : info@gandhifoundation.net
CIN No. : U73200MH2007NPL169807

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि. जलगाँव– ४२५११०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला*

(**पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।*)

संपादकीय...

गाँधी–विनोबा

भारतीय संस्कृति की परंपरा में गुरु–शिष्य की धरोहर अनोखे रूप में दिखाई देती हैं। गुरु–शिष्य के न जाने कितने किस्से हमारे पास मौजूद है। उनके गुणगान की गाथा को कई दार्शनिक चिंतको ने गाया है। कबीर ने गुरु के महत्व को दर्शाते हुए कहा कि अपनी जान भी सस्ती है अगर गुरु मिले। एक दोहे में वे कहते हैं,

यह तन विषय की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरु मिलै, तो भी सस्ता जान।।

किसको गुरु कहाँ पर मिल जाए क्या पता? एकलव्य को मूर्ति में, ज्ञानेश्वर को अपने भाई निवृत्तिनाथ में और दिए गए भाषण के सारांश को अख़बार में पढ़ने के बाद विनोबा को गाँधीजी के रूप में अपना गुरु मिला।

विनोबा जी के शब्दों में कहे तो ''मैं नहीं जानता कि गीता के अध्ययन से अधिक मूल्यवान कोई और चीज है। लेकिन हाँ, मुझे एक जीवित व्यक्ति ऐसा मिल गया है जो अपने जीवन में गीता के दर्शन का अनुगमन करता है। वह मेरा गुरु है और वह गुजरात में साबरमती के तट पर निवास करता है।'' गाँधीजी के लिए भी यह घड़ी अवसर के समान बनी। जून १९१६ में गाँधीजी ने विनोबा के पिताजी को पत्र लिखा, ''आपका पुत्र विनोबा मेरे पास है। इतनी छोटी–सी उम्र में ही उसने इतनी अधिक तेजस्विता और तपस्या अर्जित कर ली है जिसे प्राप्त करने के लिए मुझे धैर्यपूर्वक वर्षों प्रयास करना पड़ा।''

हर एक गुरु यह चाहेगा कि उनका शिष्य उनसे आगे बढ़े, उसी में गुरु की सफलता है। वैसे एक अर्थ में सफलता–निष्फलता का माजरा इस बात पर तय करता है कि शिष्य अपने गुरु के द्वारा प्राप्त ज्ञान को किस रूप में आगे बढ़ाता है। गाँधीजी द्वारा स्थापित विचार व संकल्पना को जमीन में उतारने का सार्थक प्रयास विनोबा ने किया है। इस प्रकार जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है, जिसमें सादगी है, सचाई है, ईमानदारी है, श्रम है, त्याग है, सेवा है, यह विनोबा जी के जीवन में दिखाई देता है।

प्राचीन फिलसूफी कहती हैं खुद को पहचान और नई फिलसूफी कहती हैं खुद को बदल। इन दो वैचारिक राह में से हमें खुद को पहचान कर बदलाव करने का रास्ता गाँधी और विनोबा दिखाते हैं। यह सभी में हमें जिस बात की आवश्यकता है वह है अपरिमित श्रद्धा और उससे अनुप्राणित करने वाला निष्कलंक चरित्र।

स्वयं के अंतरात्मा की शिकायत सुननी पड़े ऐसी देखभाल मनुष्य को सबसे पहले रखनी चाहिए। खुद की अंतरात्मा कि ओर से सबसे पहले सराहना मिले, और बाद में विश्व की भी सराहना मिले, उनके जितना आनंद प्रामाणिक मनुष्य को और किसी से नहीं मिलता। इस विचार में गाँधी और विनोबा ने स्वयं के जीवन को इस रूप में ढाला था जहाँ भाषा, प्रदेश, वस्त्र, विचार, धर्म के लिए किसी भी प्रकार की सरहदें नहीं रह गई थी। अब सवाल हमारा है, क्या हम अपने जीवन से किसी भी प्रकार की सरहदें मिटा रहे हैं?

विनोबा की १२५वीं जयंती के वर्ष पर यह अंक हम उनको समर्पित कर रहे हैं। इस अंक में गाँधीजी की आत्मकथा से अगला प्रकरण, विनोबा जी के विभिन्न पहलू पर लिखे लेख, डॉ. भवरलाल जैन की किताब 'आज की समाज रचना' से लेख तथा फाउण्डेशन की गतिविधियां हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

धन्यवाद,

(अश्विन झाला)

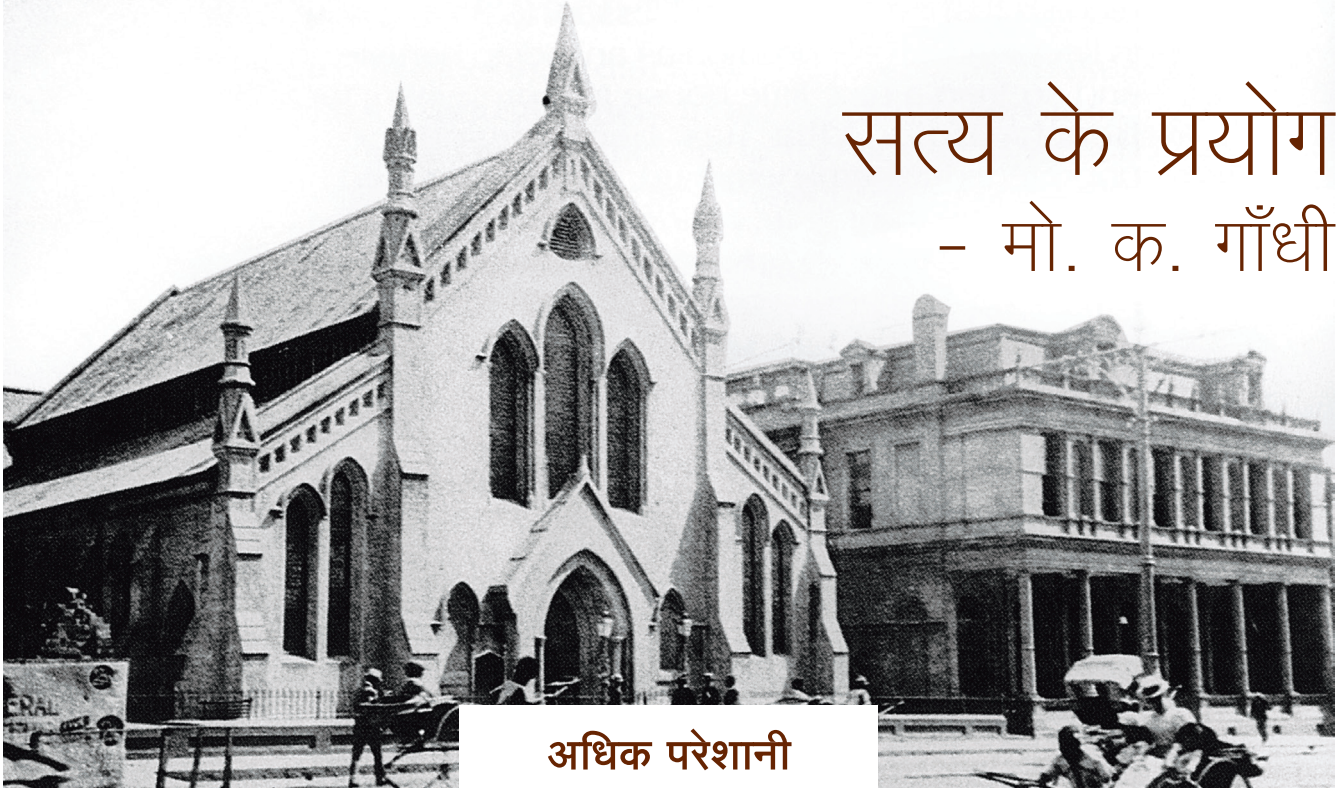

सत्य के प्रयोग
– मो. क. गाँधी

अधिक परेशानी

*'**खोज गाँधीजी की**' के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। दक्षिण अफ्रीका की गाथा को दर्शाता हुआ प्रस्तुत है आत्मकथा से अगला प्रकरण।*

– संपादक

ट्रेन सुबह चार्ल्सटाउन पहुँचती थी। उन दिनों चार्ल्सटाउन से जोहानिस्बर्ग पहुँचने के लिए ट्रेन नहीं थी, घोड़ों की सिकरम थी और बीच में एक रात स्टैण्डरटन में रुकना पड़ता था। मेरे पास सिकरम का टिकट था। मेरे एक दिन देर से पहुँचने के कारण वह टिकट रद्द नहीं होता था। इसके सिवा, अब्दुल्ला सेठ ने सिकरमवाले के नाम चार्ल्सटाउन के पते पर तार भी कर दिया था। पर उसे तो बहाना ही खोजना था, इसलिए मुझे निरा अजनबी समझकर उसने कहा, ''आपका टिकट तो रद्द हो चुका है।'' मैंने उचित उत्तर दिया। पर टिकट रद्द होने की बात तो मुझे दूसरे ही कारण से कही गई थी। यात्री सब सिकरम के अंदर ही बैठते थे। लेकिन मैं तो 'कुली' की गिनती में था। अजनबी दिखाई पड़ता था। इसलिए सिकरमवाले की नीयत यह थी कि मुझे गोरे यात्रियों के पास न बैठाना पड़े तो अच्छा हो। सिकरम के बाहर, अर्थात् कोचवान की बगल में दायें-बायें, दो बैठकें थीं। उनमें से एक पर सिकरम कंपनी का एक गोरा मुखिया बैठता था। वह अंदर बैठा और मुझे कोचवान की बगल में बैठाया। मैं समझ गया कि यह निरा अन्याय है – अपमान है। पर मैंने इस अपमान को पी जाना उचित समझा। मैं जोर-जबरदस्ती से अंदर बैठ सकूं, ऐसी स्थिति थी ही नहीं। अगर तकरार में पड़ूँ तो सिकरम चली जाये और मेरा एक दिन और टूट जाये; और फिर दूसरे दिन क्या हो, सो तो दैव ही जाने! इसलिए मैं समझदारी से काम लेकर बाहर बैठ गया। पर मन में तो बहुत झुँझलाया।

लगभग तीन बजे सिकरम पारडीकोप पहुँची। अब उस गोरे मुखिया ने चाहा कि जहाँ मैं बैठा था वहाँ वह बैठे। उसे सिगरेट पीनी थी। थोड़ी हवा भी खानी होगी। इसलिए उसने एक मैला-सा बोरा, जो वहीं कोचवान के पास पड़ा था, उठा लिया और पैर रखने के पटिये पर बिछाकर मुझसे कहा, ''सामी, तू यहाँ बैठ। मुझे कोचवान के पास बैठना है।'' मैं इस अपमान को सहने में असमर्थ था। इसलिए मैंने डरते-डरते उससे कहा, ''तुमने मुझे यहाँ बैठाया और मैंने वह अपमान सह लिया। मेरी जगह तो अंदर थी, पर तुम अंदर बैठ गए और मुझे यहाँ बैठाया। अब तुम्हें बाहर बैठने की इच्छा हुई है और सिगरेट पीनी है, इसलिए तुम मुझे अपने पैरों के पास बैठाना चाहते हो। मैं अंदर जाने को तैयार हूँ, पर तुम्हारे पैरों के पास बैठने को तैयार नहीं।''

मैं मुश्किल से इतना कह पाया था कि मुझ पर तमाचों की वर्षा होने लगी, और वह गोरा मेरी बाँह पकड़कर मुझे नीचे खीचने लगा। बैठक के पास ही पीतल के सींखचे थे। मैंने भूत की तरह उन्हें पकड़ लिया और निश्चय किया कि कलाई चाहे उखड़ जाये, पर सींखचे न छोड़ूँगा। मुझ पर जो बीत रही थी उसे अंदर बैठे हुए यात्री देख रहे थे। वह गोरा मुझे गालियाँ दे रहा था, खींच रहा था, मार भी रहा था। पर मैं चुप था। वह बलवान था और मैं बलहीन। यात्रियों में से कइयों को दया आई और उनमें से कुछ बोल उठे: ''अरे भाई, उस बेचारे को वहाँ बैठा रहने दो। उसे नाहक मारो मत। उसकी बात सच है। वहाँ नहीं तो उसे हमारे पास अंदर बैठने दो।'' गोरे ने कहा: ''हरगिज नहीं।'' पर थोड़ा शरमिन्दा वह जरूर हुआ। अतएव उसने मुझे मारना बन्द कर दिया और मेरी बाँह छोड़ दी। दो-चार गालियाँ तो ज्यादा दीं, पर एक होटेण्टाट नौकर दूसरी तरफ बैठा था, उसे अपने पैरों के सामने बैठाकर खुद बाहर बैठा। यात्री अंदर बैठ गए। सीटी बजी। सिकरम चली। मेरी छाती तो धड़क ही रही थी। मुझे शक हो रहा था कि मैं जिन्दा मुकाम पर पहुँच सकूंगा या नहीं। वह गोरा मेरी और बराबर घूरता ही रहा। अँगुली दिखाकर बड़बड़ाता रहा: ''याद रख, स्टैण्डरटन पहुँचने दे, फिर तुझे मजा चखाऊँगा।'' मैं तो गूँगा ही बैठा रहा और भगवान से अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना करता रहा।

रात हुई। स्टैण्डरटन पहुँचे। कई हिन्दुस्तानी चेहरे दिखाई दिए। मुझे कुछ तसल्ली हुई। नीचे उतरते ही हिन्दुस्तानी भाइयों ने कहा: ''हम आपको ईसा सेठ की दुकान पर ले जाने के लिए ही खड़े हैं। हमें दादा अब्दुल्ला का तार मिला है।'' मैं बहुत खुश हुआ। उनके साथ सेठ ईसा

हाजी सुमार की दुकान पर पहुँचा। सेठ और उनके मुनीम-गुमाश्तों ने मुझे चारों ओर से घेर लिया। मैंने अपनी बीती उन्हें सुनाई। वे बहुत दु:खी हुए और अपने कड़वे अनुभवों का वर्णन करके उन्होंने मुझे आश्वस्त किया। मैं सिकरम-कंपनी के एजेण्ट को अपने साथ हुए व्यवहार की जानकारी देना चाहता था। मैंने एजेण्ट के नाम चिट्ठी लिखी। उस गोरे ने जो धमकी दी थी उसकी चर्चा की और यह आश्वासन चाहा कि सुबह आगे की यात्रा शुरू होने पर मुझे दूसरे यात्रियों के पास अंदर ही जगह दी जाये। चिट्ठी एजेण्ट को भेज दी। एजेण्ट ने मुझे संदेशा भेजा: ''स्टैण्डरटन से बड़ी सिकरम जाती है और कोचवान वगैरा बदल जाते हैं। जिस आदमी के खिलाफ आपने शिकायत की है, वह कल नहीं रहेगा। आपको दूसरे यात्रियों के पास ही जगह मिलेगी।'' इस संदेशे से मुझे थोड़ी बेफिकरी हुई। मुझे मारनेवाले उस गोरे पर किसी तरह का कोई मुकदमा चलाने का तो मैंने विचार ही नहीं किया था। इसलिए मार का यह प्रकरण यहीं समाप्त हो गया। सबेरे ईसा सेठ के लोग मुझे सिकरम पर ले गए। मुझे मुनासिब जगह मिली और बिना किसी हैरानी के मैं उस रात जोहानिस्बर्ग पहुँच गया।

स्टैण्डरटन छोटा-सा गाँव है। जोहानिस्बर्ग विशाल नगर है। अब्दुल्ला सेठ ने तार तो वहाँ भी दे ही दिया था। मुझे मुहम्मद कासिम कमरुद्दीन की दुकान का नाम पता भी दिया था। उनका आदमी सिकरम के पड़ाव पर पहुँचा था, पर न मैंने उसे देखा और न वह मुझे पहचान सका। मैंने होटल में जाने का विचार किया। दो-चार होटलों के नाम जान लिए थे। गाड़ी की। गाड़ीवाले से कहा कि ग्राण्ड नैशनल होटल में ले चलो। वहाँ पहुँचने पर मैनेजर के पास गया। जगह माँगी। मैनेजर ने क्षणभर मुझे निहारा, फिर शिष्टाचार की भाषा में कहा, ''मुझे खेद है, सब कमरे भरे पड़े हैं।'' और मुझे बिदा किया। इसलिए मैंने गाड़ीवाले से मुहम्मद कासिम कमरुद्दीन की दुकान पर ले चलने को कहा। वहाँ अब्दुलगनी सेठ मेरी राह देख रहे थे। उन्होंने मेरा स्वागत किया। मैंने होटल की अपनी बीती उन्हें सुनाई। वे खिलखिलाकर हँस पड़े। बोले, ''वे हमें होटल में कैसे उतरने देंगे?''

मैंने पूछा: ''क्यों नहीं?''

''सो तो आप कुछ दिन रहने के बाद जान जाएंगे। इस देश में तो हमीं रह सकते हैं, क्योंकि हमें पैसे कमाने हैं। इसीलिए नाना प्रकार के अपमान सहन करते हैं और पड़े हुए हैं।'' यों कहकर उन्होंने ट्रान्सवाल में हिन्दुस्तानियों पर गुजरनेवाले कष्टों का इतिहास कह सुनाया।

इन अब्दुलगनी सेठ का परिचय हमें आगे और भी करना होगा। उन्होंने कहा, ''यह देश आपके समान लोगों के लिए नहीं है। देखिये, कल आपको प्रिटोरिया जाना है। वहाँ आपको तिसरे दर्जे में ही जगह मिलेगी। ट्रान्सवाल में नेटाल से अधिक कष्ट हैं। यहाँ हमारे लोगों को पहले या दूसरे दर्जे का टिकट दिया ही नहीं जाता।''

मैंने कहा, ''आपने इसके लिए पूरी कोशिश नहीं की होगी।''

अब्दुलगनी सेठ बोले, ''हमने पत्र-व्यवहार तो किया है, पर हमारे अधिकतर लोग पहले-दूसरे दर्जे में बैठना भी कहाँ चाहते हैं?''

मैंने रेलवे के नियम माँगे। उन्हें पढ़ा। उनमें इस बात की गुँजाइश थी। ट्रान्सवाल के मूल कानून सूक्ष्मतापूर्वक नहीं बनाए जाते थे। रेलवे के नियमों का तो पूछना ही क्या था? मैंने सेठ से कहा, ''मैं तो फर्स्ट क्लास में ही जाऊँगा। और वैसे न जा सका तो प्रिटोरिया यहाँ से ३७ मील ही तो है। मैं वहाँ घोड़ागाड़ी करके चला जाऊँगा।''

अब्दुलगनी सेठ ने उससे लगनेवाले खर्च और समय की तरफ मेरा ध्यान खींचा। पर मेरे विचार से वे सहमत हुए। मैंने स्टेशन-मास्टर को पत्र भेजा। उसमें मैंने अपने बारिस्टर होने की बात लिखी; यह भी सूचित किया कि मैं हमेशा पहले दर्जे में ही सफर करता हूँ; प्रिटोरिया तुरंत पहुँचने की आवश्यकता की तरफ भी उसका ध्यान खींचा, और उन्हें लिखा कि उनके उत्तर की प्रतीक्षा करने जितना समय मेरे पास नहीं रहेगा, अतएव पत्र का जवाब पाने के लिए मैं खुच ही स्टेशन पर पहुँचूंगा और पहले दर्जे का टिकट पाने की आशा रखूँगा।

इसमें मेरे मन में थोड़ा पेच था। मेरा यह खयाल था कि स्टेशन-मास्टर लिखित उत्तर तो 'ना' का ही देगा। फिर, कुली बारिस्टर कैसे रहते होंगे, इसकी भी वह कोई कल्पना न कर सकेगा। इसलिए अगर मैं पूरे साहबी ठाठ में उसके सामने जाकर खड़ा रहूँगा और उससे बात करुँगा, तो वह समझ जायगा और शायद मुझे टिकट दे देगा। अतएव मैं फ्रॉक कोट, नेकटाई वगैरा डाटकर स्टेशन पहुँचा। स्टेशन मास्टर के सामने मैंने गिन्नी निकालकर रखी और पहले दर्जे का टिकट माँगा।

उसने कहा, ''आपने ही मुझे चिट्ठी लिखी है?''

मैंने कहा, ''जी हाँ। यदि आप मुझे टिकट देंगे, तो मैं आपका एहसान मानूँगा। मुझे आज प्रिटोरिया पहुँचना ही चाहिए।''

स्टेशन-मास्टर हँसा। उसे दया आई। वह बोला, ''मैं ट्रान्सवालर नहीं हूँ। मैं हॉलेन्डर हूँ। आपकी भावना को मैं समझ सकता हूँ। आपके प्रति मेरी सहानुभूति है। मैं आपको टिकट देना चाहता हूँ। पर एक शर्त है - अगर रास्ते में गार्ड आपको उतार दे और तीसरे दर्जे में बैठाये तो आप मुझे फाँसिये नहीं; यानी आप रेलवे कंपनी पर दावा न कीजिए। मैं चाहता हूँ कि आपकी यात्रा निर्विघ्न पूरी हो। आप सज्जन हैं, यह तो मैं देख ही सकता हूँ।'' यों कहकर उसने टिकट काट दिया। मैंने उसका उपकार माना और उसे निश्चिंत किया। अब्दुलगनी सेठ मुझे बिदा करने आये थे। यह कौतुक देखकर वे प्रसन्न हुए, उन्हें आश्चर्य हुआ। पर मुझे चेताया: ''आप भलीभाँति प्रिटोरिया पहुँच जाएं, तो समझूँगा कि बेड़ा पार हुआ। मुझे डर है कि गार्ड आपको पहले दर्जे में आराम से बैठने नहीं देगा: और गार्ड ने बैठने भी दिया, तो यात्री नहीं बैठने देंगे।''

मैं तो पहले दर्जे के डिब्बे में बैठा। ट्रेन चली। जर्मिस्टन पहुँचने पर गार्ड टिकट जाँचने आया। मुझे देखते ही खीझ उठा। अंगुली से इशारा करके मुझसे कहा, ''तीसरे दर्जे में जाओ।'' मैंने पहले दर्जे का अपना टिकट दिखाया। उसने कहा, ''कोई बात नहीं; जाओ, तीसरे दर्जे में।''

इस डिब्बे में एक ही अंग्रेज यात्री था। उसने गार्ड को आड़े हाथों लिया: ''तुम इन भले आदमी को क्यों परेशान करते हो? देखते नहीं हो, इनके पास पहले दर्जे का टिकट है? मुझे इनके बैठने से तनिक भी कष्ट नहीं है।''

यों कहकर उसने मेरी तरफ देखा और कहा: ''आप इतमीनान से बैठे रहिये।'' गार्ड बड़बड़ाया: ''आपको कुली के साथ बैठना है, तो मेरा क्या बिगड़ता है?'' और चल दिया।

रात करीब आठ बजे ट्रेन प्रिटोरिया पहुँची।

-'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार, पृष्ठ क्र.१०२-१०७, क्रमश:

विनोबा-१२५

२०१९ का वर्ष दो तरह से विशेष बना है। गाँधीजी और कस्तूरबा की १५०वीं जयंती और विनोबा भावे की १२५वीं जयंती का वर्ष है। हालांकि बापू कभी अपने को गुरु के तौर पर नहीं मानते थे और अपने को भी किसी के शिष्य के तौर पर नहीं मानते थे। फिर भी गाँधीजी के सर्वोत्कृष्ट शिष्य के रूप में अगर किसी का नाम सबसे पहले लिया जाता है तो वह है विनोबा भावे। उन्होंने गाँधीजी के विचार आधारित कृति को सार्थक कर दिखाया। एक अर्थ में उन्होंने बापू के विचार ही नहीं अपनाए बल्कि वस्त्र भी अपनाए।

विनोबा ने अपने जीवन में गाँधी विचार की कई संभावनाओं को साकार किया हैं। उनके जीवन की प्रमुख गाथा में 'गाँधी' और 'गीता' केन्द्र स्थान पर है। विनोबा जी की १२५वीं जयंती वर्ष पर उनके जीवन के प्रमुख कार्यों व विचारों को कुछ लेखों के द्वारा प्रस्तुत कर रहे हैं।

– संपादक

अन्तर्बाह्य एकता की अवस्था

गाँधीजी ने मेरी परीक्षा, कसौटी की होगी या नहीं, मैं नहीं जानता। लेकिन अपनी बुद्धि से मैंने उनकी बहुत परीक्षा कर ली थी, और यदि इस परीक्षा में वे कम उतरते तो उनके पास मैं टिक नहीं पाता। मेरी परीक्षा करके उन्होंने मुझमें चाहे जितनी खामियां देखी होंगी या देखते होंगे, तो भी वे अपने साथ रखते थे। किंतु अगर मुझे उनकी सत्यनिष्ठा में कुछ भी कमी, न्यूनता या खामी दिखती, तो मैं उनके पास टिक नहीं पाता।

बापू हमेशा कहते थे कि मैं तो अपूर्ण हूँ, अधूरा हूँ। उनकी बात सच थी। झूठ बोलना वे जानते नहीं थे। वे सत्यनिष्ठ थे। मैंने ऐसे बहुत-से महापुरुष देखे हैं, जिन्हें अपने बारे में ऐसा भास होता है कि वे मुक्त पुरुष हैं, पूर्ण-पुरुष हैं। फिर भी ऐसे किसी का मुझे आकर्षण नहीं हुआ। लेकिन सदैव अपने को अपूर्ण मानने वाले बापू का ही मुझे अनोखा आकर्षण रहा। मुझ पर जितना असर बापू का पड़ा। उतना पूर्णता का दावा करने वाले दूसरे सज्जनों का नहीं पड़ा।

मैं बापू से मिला और उन पर मुग्ध हो गया, सो उनकी अंतर्बाह्य एकता की अवस्था के कारण। फिर, कर्मयोग की दीक्षा मुझे बापू से मिली। गीता में तो यह कहा ही गया है, लेकिन उसका साक्षात्कार हुआ बापू के जीवन में। गीता के कर्मयोग का प्रत्यक्ष आचरण मैंने बापू में देखा। गीता में स्थितप्रज्ञ के लक्षण आते हैं। यह वर्णन जिस पर लागू हो, ऐसा स्थितप्रज्ञ देहधारी खोजने पर बड़े भाग्य से ही मिलेगा। लेकिन इन लक्षणों के बहुत निकट पहुँचे महापुरुष को मैंने अपनी आँखों से देखा।

संदर्भः गाँधीः जैसा विनोबा ने देखा-समझा, पृ. सं. २-३ से साभार।

◆◆◆

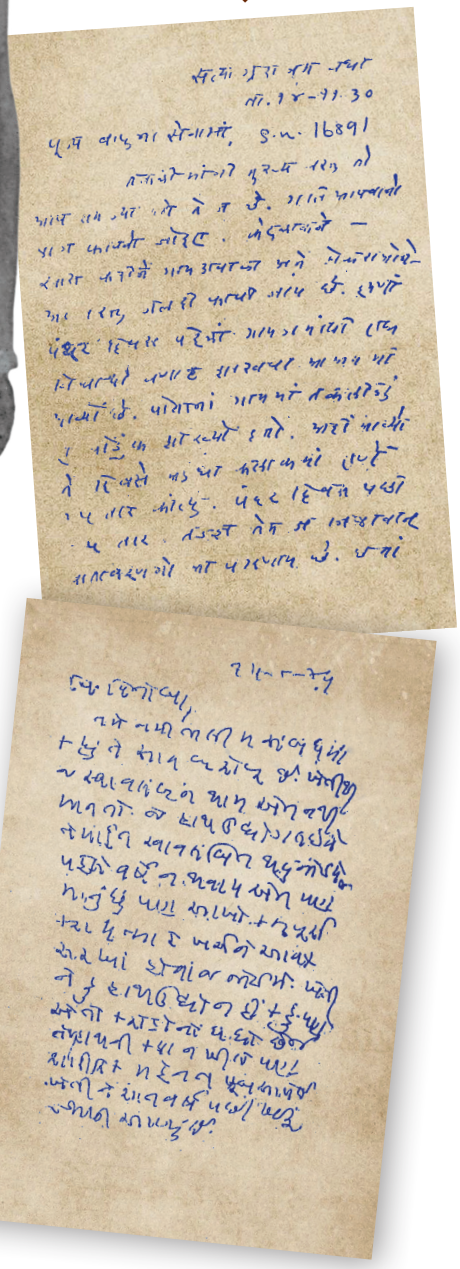

गाँधीजी और विनोबा जी ने एक-दूसरे को लिखे हुए पत्र।

Vinoba Bhave during a walking seminar with Dada Dharmadhikari and Vimla Thakar (all centre), 1957.

Bhoodan: A New Taste of Nonviolent Revolution

Bhoodan movement turned out to be an unprecedented demonstration of the efficacy of nonviolence as a method of social reform. Over 6 lakh land holders offered 45 lakh acres of land for the benefit of over 1 million landless families. It was a revolution without a coup or bloodshed.

The politically independent India was still reeling under feudalism. Zamindari tenancy, caste hierarchy, to name a few, exacerbated by massive poverty and illiteracy, weighed heavily on the masses.

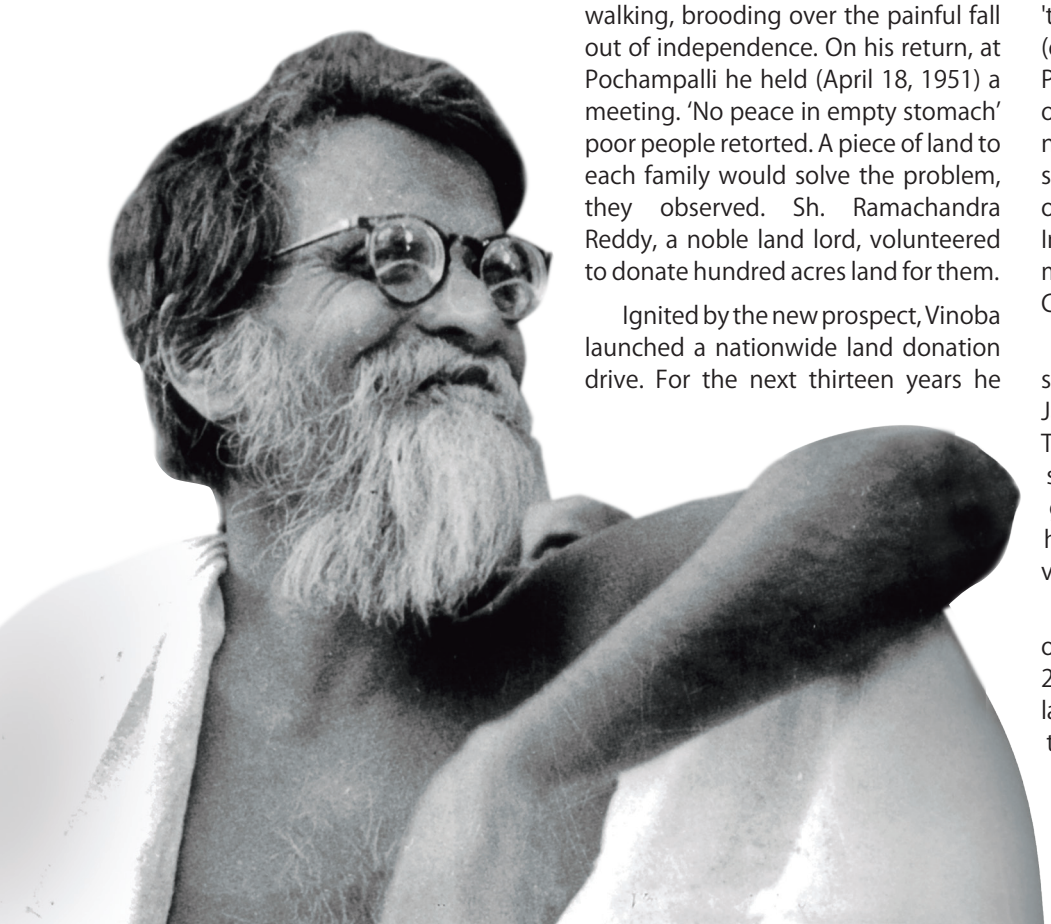

Vinoba Bhave, the chosen satyagrahi, went into contemplation. When Sarvodaya-samaj, a newly formed network of Gandhian constructive workers, convened a conference in Telengana, the epicentre of communist revolt, Vinoba went there walking, brooding over the painful fall out of independence. On his return, at Pochampalli he held (April 18, 1951) a meeting. 'No peace in empty stomach' poor people retorted. A piece of land to each family would solve the problem, they observed. Sh. Ramachandra Reddy, a noble land lord, volunteered to donate hundred acres land for them.

Ignited by the new prospect, Vinoba launched a nationwide land donation drive. For the next thirteen years he walked continuously through UP, Bihar, Orissa, AP, TN, Karnataka, Maharashtra, Gujarat, Rajasthan, Punjab, Kashmir, MP, and Assam. Everywhere, he learnt the language of the people and spoke in their tongue, accepting their life, their pain and their aspiration. People saw in him their own self and shared the best in them for the languishing neighbors. He called it bhoodan-yagna.

"I am not here", he told people, 'to beg (bhiksha), but to initiate you (offer you diksha) into nation building.' People in return offered large chunks of their land at the altar of the new nation, and along with it their feudal supremacy. He saw in it the resurgence of patriotic fervor in the new born India, that prompted him to call this movement, the new phase of 'Dharma Chakra Paravartan'.

The front line leaders of freedom struggle joined the movement, with Jayaprakash Narayan leading it in Bihar. Thousands of youth gave up their studies for a year and campaigned for gramdan. Over 80 teams of volunteers had parallel bhoodan campaign in various corners of the country.

The bhoodan coffer was overflowing. The UP offered about 295054 acres, and Bihar gave 28 lakhs. Over 5000 villages declared themselves Gramdan villages. AP

Vinoba Bhave playing a traditional drum of the tribal community at Koraput who had come to welcome him, c. 1955.

Vinoba Bhave during Bhoodan, c. 1952.

and TN offered large chunks of fertile land. In Odisha there were instances of land lords donating their entire land (100 acres in one case) and accepting 5 acres in return, while in the same village landless larger families getting more than five acres. It was an act of unbelievable human gesture of social justice and equality, evoked by the passion of nationalism, reiterating the supremacy of nonviolence as a means of civilization.

While the Bhoodan met with a number of procedural hiccups, including that of the distribution, monitoring the utilization of the land, etc., the campaign proved beyond doubt the fact that appropriate application of nonviolent force can bring about a social reformation which the world hitherto thought, would be possible only by bloody revolution.

-- Dr. D John Chelladurai,
Dean Academics, Gandhi Research Foundation

मेरी अंतरात्मा गवाही देती है कि बापू ने जो अहिंसा का, प्रेम का मार्ग दिखाया है, उस पर चलने की मैंने पूरी-पूरी कोशिश की है। मैंने प्रयत्नों की पराकाष्ठा कर दी। एक क्षण भी ऐसा याद नहीं कि मैं असावधान रहा हूँ। बापू के जाने के बाद मैं बापू का ही काम कर रहा हूँ, इसमें मुझे रत्तीभर शंका नहीं है। इस काम से मेरे हृदय में अपार आनंद होता है और उसमें मैं बापू को निरंतर अपने साथ देखता हूँ। मैं मानता हूँ कि मेरे चिंतन में बापू का सार रूप अंश है। बापू के समय की अपेक्षा बहुत अधिक आज मैं उनके सान्निध्य में हूँ। उन्होंने जो कुछ कहा है, उस संबंध में चिंतन करने में आज मुझे उनकी ओर से जितनी मदद मिलती है, उतनी और किसी से नहीं मिलती।

बापू हम सबके हृदय में विराजमान हैं। अब वे हमारे हृदय में भगवान का स्थान ले चुके हैं। भक्त और भगवान एक हो गए हैं। जब वे जीवित थे, तब भगवान से अलग रहकर सेवा-कार्य करते थे। अब प्रयाण के बाद वे भगवान में मिल गए हैं और हमारे काम को आशीर्वाद दे रहे हैं।

– विनोबा

मेरी अंतरात्मा गवाही है

Gitai: Vinobaji's 'life-breath'

The spiritual bond between Acharya Vinoba Bhave and the Shrimad *Bhagavad Gita* transcended mundane reason. In his own words, Vinobaji proclaimed that he had received more nourishment from the *Gita* than his physical body had from his mother's milk. Thereby underscoring his extraordinary relationship of loving tenderness with this preeminent sacred text that he pertinently called *Gitai* (mother Gita), Vinobaji described the spiritual epiphany experienced, as follows: "Moving beyond the intellect, I [⋯] soar high in the vast expanse of the *Gita* on the twin wings of faith and experimentation."[1] Constituting his "life-breath", the 'Song Celestial' was compared metaphorically by him to an "ocean of nectar" upon whose surface he could remain afloat or, alternatively, would dive into its depths to derive spiritual sustenance.

Given this intimate spiritual symbiosis, Acharya Vinobaji, albeit considered to be the most erudite pundit[2] among Mahatma Gandhi's disciples, adopted a remarkably simple diction with distinctive appeal in his celebrated *Talks on the Gita.*[3] His lucid and logical interpretation of the *Gita* constitutes a spiritual road-map, so-to-speak, for dealing with the practicalities of everyday life,[4] and hence remains relevant today, serving as a transformative inspiration for our future. Indeed, the Acharya firmly believed that the *Gita's* quintessential message was to spiritualize human life and to imbue it with divinity.

Thought-provokingly, Vinobaji's original contribution to the bountiful hermeneutics of this hallowed text is substantiated by the key concept of 'pure action' *(akanna)*, articulated with translucent precision as "inaction in action and action in inaction".[5] This dialectic mode is complemented at another juncture by his analytical explanation of the Sankhya system in disarmingly simple terms, namely that (i) the atma is deathless and indivisible, (ii) the body is insignificant and transient, and (iii) *swadharma* must be followed.[6] Further, as cogently elaborated by him, the Gita's purpose is to dispel delusion that prevents us from performing our *swadharma.*

In like manner to Gandhiji's interpretation of the *Gita*, Vinobaji accentuates nonviolence and the renunciation of the fruits of action as 'categorical imperatives'; yet in contrast to his master's stress on *satya*, the disciple spotlights *bhakti* as the primary means for attaining fulfilment through selfless action. *Summa summarum,* as a preeminent *Gita* exegete, Vinobaji exemplifies that he "is first and last a man of God".[7]

Reference:

1] Vinoba: Talks on the Gita, Paunar 2005 chapter 1, p. 2.

2] As a preceptor of Sanskrit, philosophy and the religious literature of the world, he was also a reputable linguist (being cognizant of several Indian and international languages) and a renowned writer.

3] Gita Pravachane was a series of 18 talks given in Marathi to jail inmates in Dhule prison from February-June 1932 and recorded by Sane Guruji. After being finalized by Vinoba, the text was published in 1940, and subsequently translated in 24 languages.

4] Considered to have the potential for revolutionary transformation, Vinoba wielded the Gita as a vehicle to propagate the Bhoodan movement (from 1951), as well as to lay the foundation for his Brahma Vidya Mandir Ashram (established in 1959) in Paunar. Paradigmatically, Gandhiji had recommended Vinobaji as Kasturba's Guru for the Gita.

5] Comprising the 18th verse of 4th chapter, the concept is subsequently elaborated upon in the 5th chapter, distinguishing between karma, vikarma and akarma.

6] Talks on the Gita, op. cit., chap. 2, p. 28.

7] Jayaprakash Narayan, Introduction, ibid., p. 6.

- Prof. Gita Dharampal

Dean, Research, Gandhi Research Foundation

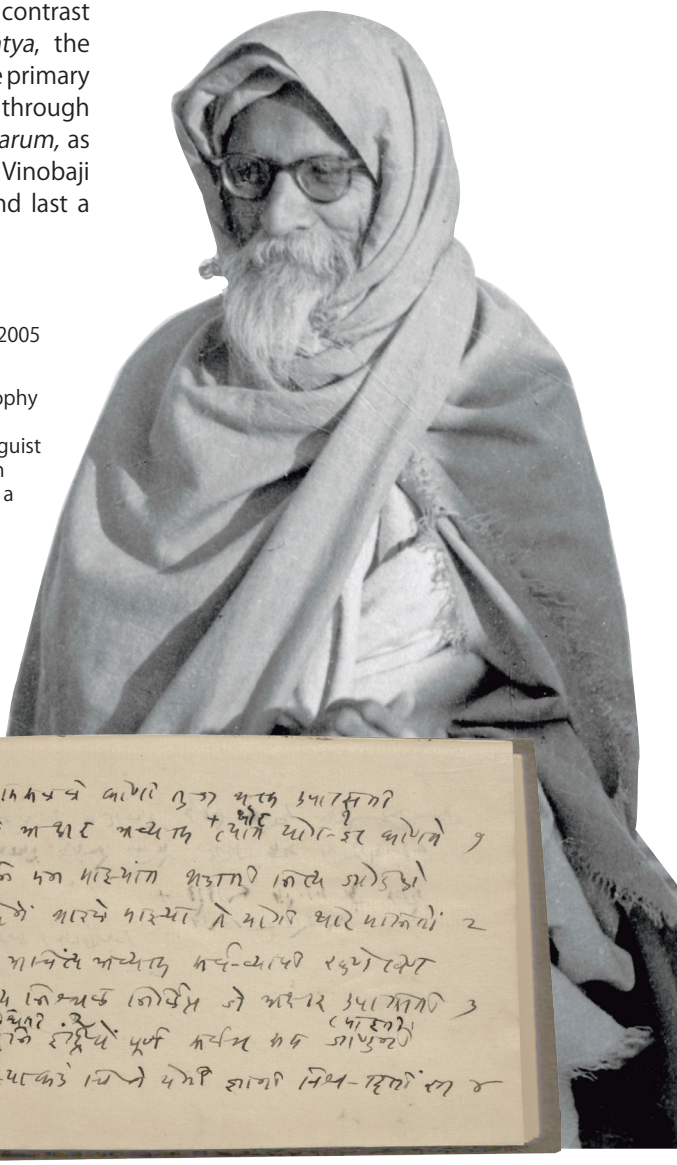

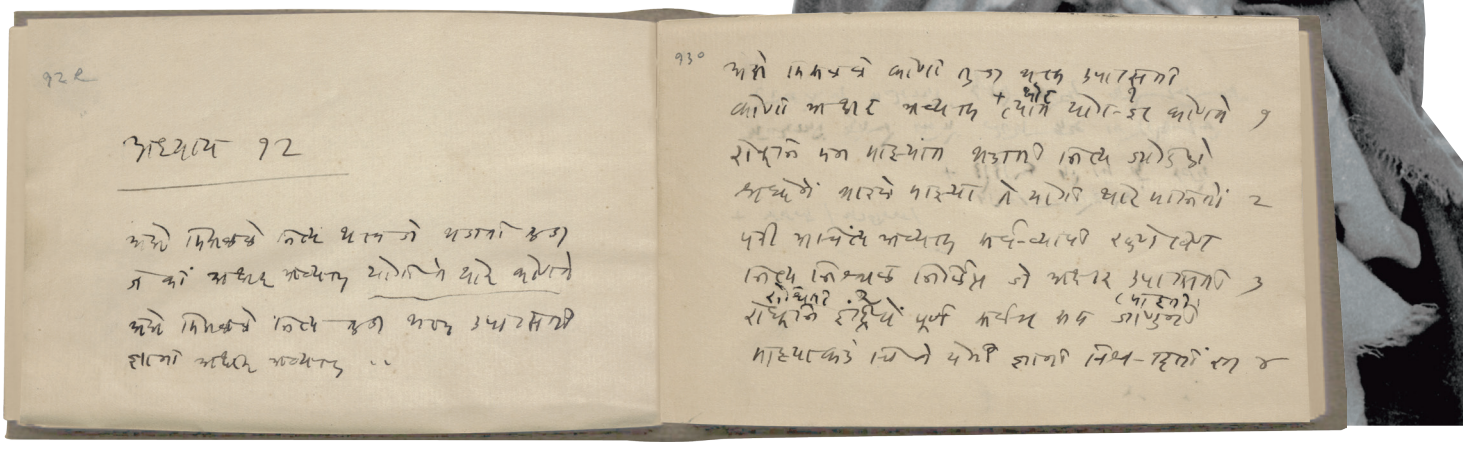

विनोबा जी के हस्ताक्षर में लिखी हुई 'गीताई' – संग्रह: अभिलेखागार, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

विनोबा जी और महाराष्ट्र

महाराष्ट्र भारतीय संस्कृति और धर्म का प्रमुख केंद्र रहा है। यह संतों की भूमि है। संतों में सबसे प्रमुख वे संत जो राष्ट्र संत हो गए और जिनके विचार आज भी समाज में प्रासंगिक बने हुए हैं उन महापुरुषों की कीर्ति किसी एक युग तक सीमित नहीं रहती। उनका लोक हितकारी चिंतन कालजयी होता है और युग-युगों तक समाज का मार्गदर्शन करता है। आचार्य विनोबा भावे हमारे ऐसे ही एक प्रकाश स्तंभ हैं, जिनकी जन्म जयंती ११ सितम्बर को मनाई जाती है। वे अपने समय के सूर्य थे। वे संतों की उत्कृष्ट पराकाष्ठा थे, भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता तथा प्रसिद्ध गाँधीवादी नेता थे।

विनोबा जी का जन्म १८९५ में महाराष्ट्र के रायगड जिले मे गागोदे नाम के गाँव में हुआ था। विनोबा जी के पिता नरहरि राव तथा माता रुक्मणि देवी अत्यंत धार्मिक प्रवृति के थे। माता घर का कार्य करते हुए मराठी संतों के भजन गाती रहती थी। माँ ने इनका नाम विन्या रखा था। उसे क्या पता था कि आगे चलकर इसका पुत्र विनय की साक्षात् मूर्ति बन जाएगा। उन्होंने इसी प्रभाव में महाराष्ट्र के सभी संत तथा दार्शनिकों को पढ़ा था। वर्ष १९१६ में विनोबा भावे अपनी इन्टरमीडियेट की परीक्षा देने मुंबई जा रहे थे। रास्ते में ही उनका मन बदला और वे बनारस की ओर चल पड़े और गाँधीजी के संपर्क में आ गये जब से जीवन की दिशा ही मानो बदल गई। गाँधीजी के साथ संपर्क में आने पर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। सन् १९२२ में नागपुर का झंडा सत्याग्रह किया। ब्रिटिश हुकूमत ने सी.आर.पी.सी. की धारा १०९ के तहत विनोबा को गिरफ़्तार किया। नागपुर जेल में विनोबा को पत्थर तोड़ने का काम दिया गया। कुछ महीनों के पश्चात् अकोला जेल भेजा गया। विनोबा का तो मानो तपोयज्ञ प्रारंभ हो गया।

५८,७४१ किलोमीटर की पदयात्रा वाले भूदान आंदोलन के रूप में सारे विश्व में प्रख्यात विनोबा जी कई सारी भाषाओं के अध्येता थे। वे कहते थे कि गीता उनके जीवन की हर एक सांस में है। उन्होंने गीता को मराठी भाषा में अनुवादित भी किया था जो 'गीताई' के नाम से प्रसिद्ध है। १२वीं शताब्दी में संत ज्ञानेश्वर ने इस महान भारतीय सांस्कृतिक मूल्य के ग्रंथ को तत्कालीन लोकभाषा प्राकृत में अनुवादित किया था उतना ही महान कार्य विनोबा ने इसे सरल सादी मराठी में अनुवादित कर किया।

उन्होंने अपनी मृत्यु के लिए दीपावली का दिन (१५ नवम्बर) निर्वाण दिवस के रूप में चुना। इस प्रकार अन्न जल त्याग ने के कारण एक सप्ताह के अंदर ही १५ नवम्बर १९८२, वर्धा, महाराष्ट्र में उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए। न केवल जीवन के ३३ साल गाँधीजी के साथ रहे बल्कि एक जीवनयात्रा संपन्न होने पर सेवाग्राम की धरती पर ही अपना देह त्यागकर पवनार आश्रम के रूप में वे हमेशा के लिए बापू के साथ मानो युग-युग के लिए विलीन हो गए।

पूंजीवाद और साम्यवाद का विकल्प सर्वोदय ही हो सकता है यह संदेश देनेवाले विनोबा जी ने सर्वोदय कार्यकर्ताओं का जो व्यापक समूह कार्यरत किया उन सर्वोदयी कार्यकर्ताओं ने महाराष्ट्र-कर्नाटक में भाषिक तनाव और आगजनी की घटनाओं के समय समाज में मेल-मिलाप कराने का, महाराष्ट्र के कोयना और लातूर के भूकंप तथा पानशेत का बांध टूटने समय बहुत बड़ा राहत कार्य किया, महाराष्ट्र के आदिवासी बहुल गड़चिरोली जिले में शराबबंदी, जंगलतोड बंदी कानून लाने का, देवनार (मुंबई) में सालों से देश में गोवंश हत्या बंदी कानून बनाने के लिए अखंड सत्याग्रह चलाकर उसे पारित करवाने जैसे कई कार्यों को अंजाम दिया।

भले ही गाँधीजी और विनोबा जैसे संत देह से आज हमारे बीच उपस्थित न हों लेकिन उनके विचार से और उनके विचारों से प्रेरित कार्यकर्ताओं के कार्य के रूप से वे आज भी हमारे बीच में उपलब्ध हैं और निरंतर रहेंगे।

– भुजंगराव बोबडे
परीक्षा नियंत्रक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

◆◆◆

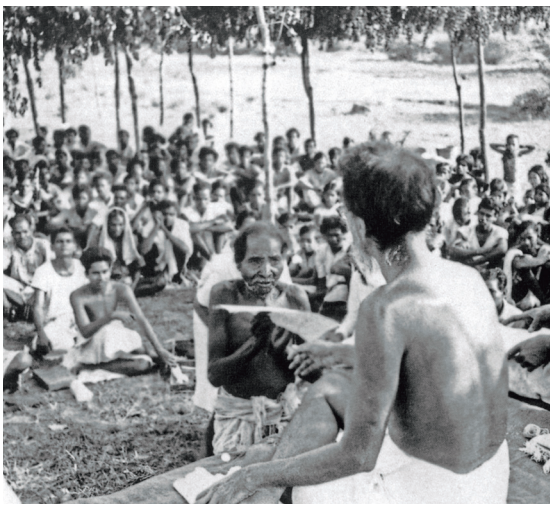

आदिवासी व्यक्ति को भूमि दान करते हुए विनोबा भावे, १९५४

आज की समाज रचना

कायदे-कानून एवं संस्थाओं को मानवजाति की प्रगति के साथ-साथ परिवर्तित होते रहना चाहिए।

स्व. डॉ. भवरलालजी जैन द्वारा लिखित मराठी कृति 'आज की समाज रचना' किताब का शेष उपसंहार पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। समग्रता के आधार पर हमारे समुदाय का चित्र डॉ. भवरलालजी जैन ने अपनी कृति 'आज की समाज रचना' में प्रस्तुत किया है। 'खोज गाँधीजी की' के अंकों में इस किताब को क्रमशः प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उम्मीद है यह किताब आपको एक नया दृष्टिकोण देने में सफल रही होगी। हमारे सुधी पाठकों से अनुरोध है कि इस किताब के बारे में आपके अभिमत हमें अवश्य प्रेषित करें।

– संपादक

समाज में हिंसक क्रांति और अराजकता को टालना हो तो यथा सम्भव चली आ रही दुष्प्रवृत्तियों एवं विकृतियों में सतत सुधार करना, उसमें आवश्यक संशोधन करना, उथल-पुथल को सही करना, आवश्यकतानुसार पुनर्रचना या बदलाव करना आवश्यक है। जेफरसन के अनुसार: कायदे-कानून एवं संस्थाओं को मानवजाति की प्रगति के साथ-साथ परिवर्तित होते रहना चाहिए। जैसे-जैसे नए आविष्कार होते हैं, नयी वास्तविकताएं, यथार्थताएँ सामने आती हैं, और परिस्थिति के साथ विचार धाराएँ एवं तरीके परिवर्तित होते हैं, वैसे-वैसे संस्थाओं को भी समय के साथ-साथ आगे बढ़ना चाहिए। जवाहरलाल नेहरू तो इससे भी अधिक दूरगामी बात करते हैं : अगर आप किसी भी वस्तु को कठोर एवं स्थायी बना देते है, तो आप राष्ट्र के विकास, जीवन के विकास, ओजस्वी, ऐन्द्रिय समाज की उन्नति को रोकते हैं।

नियामक संस्थाओं के आधारभूत नियम-कानूनों में अपेक्षित वृद्धि और उनमें कुछ अतिरिक्त परिवर्तन हमें अपनी ओर से कर लेना चाहिए। सरकार नामक संस्था के स्वरूप में आधारभूत परिवर्तन कर सामाजिक जीवन में सरकार का स्थान मर्यादित ही रखना चाहिए। वर्तमान स्थिति में सरकार ही लोगों को परिवर्तित करे, ऐसी धारणा बन चुकी है। भविष्य में लोग सरकार बदलेंगे, ऐसी समाज-रचना और व्यवस्था हमें स्वीकार करनी चाहिए।

विधिवत स्थापित समाज रचना और संस्था को निष्ठुरता से परिवर्तित कर देना समय की माँग है। पश्चिम से उधार लिए औपचारिक प्रजातंत्र के भारतीयकरण का यह प्रारंभिक बिन्दु होगा। यह स्वाभाविक रूप आज प्रचलित संस्थाओं के लिए अपेक्षित नहीं है। उनसे प्रत्येक के मित्रतापूर्ण संबंध और निहित स्वार्थ इतने विस्तृत और व्यापक हो गए हैं कि उन्हें वर्तमान स्थिति में आधारभूत परिवर्तन करने की आवश्यकता ही अनुभव नहीं होगी।

प्रत्येक पाँच से सात वर्षों में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आधारभूत परिवर्तन आवश्यक होते हैं। इन परिवर्तनों का आधार लोकशिक्षा, सूचना, जैवशास्त्र, संदेश, संपर्क, संचरण अतिसूक्ष्म अभियांत्रिकी तकनीक आदि होता है। इनका प्रसार और व्यापारीकरण भयावह गति से हो रहा है। जिससे प्रतीत होता है कि वे मानव जाति के पूर्ण अस्तित्व को ही अपने आगोश में समाहित कर लेंगे। उनको विलंबरहित न्यायप्रक्रिया और विकेंद्रित सत्ता के साथ संयुक्त करना आवश्यक है। पुनर्रचना में मिलाप कार्य में सज्जनशक्ति एवं उसके अभिन्न घटकों जैसे आम भारतीय नागरिकों और स्वतंत्रता के लाभ से वंचित उपेक्षित वर्ग को एक सूत्र में बाँधना होगा।

उपर्युक्त निर्देशित सांकेतिक उपायों से समाज की पुनर्रचना होगी और इससे जनता के छीने गए अधिकार, सत्ता एवं स्वामित्व वापस मिलेंगे। जनता का कार्यपालिका, विधि, न्याय और चुनाव व्यवस्था नामक चारों आधारभूत संस्थाओं पर नियंत्रण और प्रभाव बढ़ेगा। अपना कल्याण करने की शक्ति जनता के हाथों में आ जायेगी। अगर ऐसा नहीं होता तो शासक अकबर हो या औरंगजेब, जनता समान रूप से गुलाम रहेगी। लोगों के दबाव के बिना प्रशासनिक कार्य सुचारू रूप से चलना और संविधान

डॉ. भवरलालजी जैन

में उल्लेखित स्वतंत्रता, न्याय और समानता की संकल्पनाओं का साकार होना संभव नहीं होगा। सज्जनशक्ति को समय रहते सहकार या प्रतिकार करने की स्थिति की जानकारी रखनी चाहिए और यथा सम्भव उस पर निर्भयता पूर्वक अमल करना चाहिए। वैसा करते समय उनमें क्षोभ उत्पन्न हो। भले ही ऐसा समुदाय छोटा हो तो भी वह देश की सेवा कर सकेगा; गतिशील, प्रभावशाली और विराट समाज निर्मिति के कार्य में सहयोग दे सकेगा।

स्वतंत्रता के पूर्व सक्षम अंग्रेज सरकार से सत्ता छीन लेने के लिए आंदोलन, निरक्षरता, धर्म, धार्मिक असहिष्णुता, नारी-मुक्ति वर्णव्यवस्था पर आधारित समाज-रचना जैसी दुष्कर समस्याओं पर विजय पाने के लिए सज्जनशक्ति ने दीर्घकाल तक संघर्ष किया था। इस शक्ति ने अधिकांश समस्याओं के निराकरण में सफलता प्राप्त की थी। उस समय भी सामान्य समाज का साधारण घटक कम जोर, बिखरा हुआ और अस्त-व्यस्त था। उस युग में भी सामाजिक समरसता नहीं थी। वह अपनी दैनिक आवश्कताओं की पूर्ति के लिए संघर्षरत था। लेकिन उसमें स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रबल इच्छा थी। आज भी भ्रष्टाचार से मुक्ति पाने के संबंध में सर्वत्र एकसमान स्थिति है। इस समय वर्तमान समाज को एक सशक्त नेतृत्व की आवश्यकता है। अनुयायी उसकी राह देख रहे हैं। जनता को आज एक प्रकाश दिखाने वाला चाहिए, जनता अंधेरे में भटकते हुए न केवल लड़खड़ा रही है अपितु धक्के भी खा रही हैं। सज्जनशक्ति को चाहिए कि सर्वप्रथम वह उपर्युक्त लिखित मौलिक अधिकारों पर जनता की राय लेकर वर्गीकृत करने का कार्य प्रारंभ कर दें। कम से कम आज उनके साथ संचार, संपर्क, प्रसार के प्रभावी साधन, विस्तृत शिक्षा और स्त्री वर्ग की जागृति उपलब्ध है। स्वतंत्रता के पूर्व ये साधन उपलब्ध नहीं थे।

फाउण्डेशन की गतिविधियां

फाउण्डेशन के छात्रों की अभ्यास यात्रा

अखिल भारतीय नई तालीम समिति के अध्यक्ष डॉ. सुगम बरंठ के साथ नई तालीम के विषयवस्तू पर विचार–विमर्श

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा संचालित पीजी डिप्लोमा इन सस्टैनेबल रूरल डेवलपमेन्ट के छात्रों की सात दिवसीय अभ्यास यात्रा १३ से १९ नवम्बर तक आयोजित की गई। यह अभ्यास यात्रा दो भाग में आयोजित की गई थी। उनमें एक भाग पवनार में जहाँ विनोबा जी की १२५वीं जयंती के उपलक्ष्य में मित्र मिलन में सम्मिलित हुए थे। चार दिवसीय आयोजित इस मित्र मिलन का आरंभ सेवाग्राम आश्रम की मुलाकात तथा सेवाग्राम से पवनार आयोजित पदयात्रा से हुआ। इस मिलन के दौरान हमारे छात्रों को कई महानुभाव तथा वरिष्ठ गाँधीजनों से रूबरू होने का मौका प्राप्त हुआ। इसमें मुख्य रूप से पवनार ब्रह्मविद्या की बहनें, मोरारी बापू, सैमदंग रिंपोचे जी का समावेश होता है। मित्र मिलन के इस दिनों में विनाबो जी के विभिन्न पहलू को समझने का मौका प्राप्त हुआ।

पवनार में चार दिन बिताने के बाद हमारी टीम वर्धा में स्थित गाँधी विचार परिषद की मुलाकात के लिए निकली। देश भर में विभिन्न विश्वविद्यालयों में गाँधी पर अध्ययन कोर्स चलाए जाते हैं, लेकिन वर्धा स्थित गाँधी विचार परिषद में गाँधी अध्ययन का तौर तरीका इन विश्वविद्यालयों से न केवल अलग है बल्कि अनूठा भी है। यहाँ के निदेशक भरत महोदय तथा डीन डॉ. सिबी जोसेफ के साथ हमारे छात्रों का संवाद आयोजित किया गया। इस संवाद में भरत महोदय ने वर्तमान स्थिति के परिपेक्ष्य में हमारी जीवनशैली तथा उनमें आए बदलाव की गाथा को प्रस्तुत कर गाँधी विचार की प्रासंगिकता को दर्शाया। डॉ. सिबी जोसेफ ने जलवायु परिवर्तन के नतीजे किस रूप में प्राप्त हो रहे हैं उनके प्रति चेतावनी प्रकट कर बदलाव की धारा का मूल्यांकन करने की सलाह दी। इसी संस्थान में तीसरा सत्र डॉ. उल्लास जाजू का रहा, डॉ. जाजू वर्धा स्थित कस्तूरबा अस्पताल में अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं। डॉ. उल्लास जाजू ने अपनी प्रस्तुति में लोक केंद्रित विकास की परिभाषा के विभिन्न आयाम को प्रस्तुत कर मेंढ़ा–लेखा गाँव को केस स्टडी के रूप में प्रस्तुत किया। डॉ. जाजू पिछले ४० सालों से ग्रामीण समुदाय के साथ कार्य कर रहे हैं। अपना साप्ताहिक छुट्टी का समय ग्रामीण उत्थान के लिए उपयोग करते हैं। अपने अनुभव कथन में डॉ. जाजू ने ग्रामीण भाग की विशेषता तथा कार्यकर्ता के लिए मंत्र देते हुए कहा कि अगर हमें ग्रामीण लोगों के लिए कार्य करना है तो यह मंत्र हमें आत्मसात करना चाहिए।

१) लोगों के पास जाओ (Go to the people)
२) उनकी तरह जिओ (Live like them)
३) उनके साथ काम करो (Work with them)
४) उनको जानो (Know them)
५) उनसे सीखो (Learn from them)
६) उन्हें प्यार करो (Love them)
७) उनके साथ योजना बनाओ (Plan with them)
८) जो संसाधन उनके पास है, उससे आरंभ करो (Start from what they have)
९) जो वे जानते हैं, उससे निर्माण करो (Build upon what they know)

इसी शाम वर्धा स्थित नई तालीम परिसर में नई तालीम के अध्यक्ष डॉ. सुगन बरंठ के साथ संवाद हुआ। डॉ. सुगन बरंठ ने नई तालीम की संकल्पना तथा उनके विभिन्न पहलू को प्रस्तुत किया। १८ नवम्बर के दिन सुबह आनंदवन की यात्रा के लिए निकले। आनंदवन प्रसिद्ध समाजसेवी बाबा आमटे की कर्मभूमि रही है। बाबा आमटे ने अपना पूर्ण जीवन कुष्ठ रोगियों की सेवा में समर्पित किया है। आनंदवन गाँव समग्र विकास की रूपरेखा पर सार्थक होता है, जब गाँव उत्पादन की इकाई बनता है तब स्वावलंबन की दिशा प्राप्त करता है आनंदवन इस बात का जीवंत उदाहरण है। छात्रों के लिए यह नया दृष्टिकोण देने वाला अनुभव बना।

इस यात्रा में छात्रों को सहभागितापूर्ण ग्रामीण विकास हस्तक्षेप, लोक–संगठन, नवीन पद्धति, चुनौतियां तथा सामाजिक परिवर्तन के लिए अहिंसक योजना की समझ प्राप्त करने में प्रेरणास्पद बना।

'मैं भूमिपुत्र, मैं बनूंगा गौरव भारत महान का...' शेणपाणी गाँव के किसानों का जैन हिल्स पर अभ्यास दौरा

शेणपाणी – एक कदम वाडी प्रकल्प की ओर

कृषि केवल हमारा जीवन निर्वाह करने का माध्यम ही नहीं है, बल्कि यह हमारी धरोहर है, हमारी संस्कृति है। इसे उन्नत बनाने के प्रयास से फाउण्डेशन द्वारा चोपड़ा तहसील के आदिवासी गाँवों में वाडी प्रकल्प कार्यान्वित किया गया है। इस प्रकल्प के अंतर्गत किसान अपनी एक एकड़ जमीन पर जैविक खेती के आधार पर मिश्र फसल बोएंगे।

इस वाडी प्रकल्प को सफल करने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में किसानों के सवालों पर चर्चा की गई। कई किसान यह मानते थे की कपास जैसी फसल उन्हें अच्छी आमदनी देती है, लेकिन अगर हम उनमें होने वाले खर्च का लेखा करते हैं तब हमें पता चलता है कि कई तरह के रासायनिक उत्पादों को प्रयोग करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त जब फसल हमारे हाथ में आती है उस वक्त बाजार का दाम कम हो जाता है। ऐसी स्थिति में अगर हम मिश्र फसल लगाते हैं जिसमें दलहन, सब्जियां, तिलहन फसल लगाते हैं तब दो फायदे होते हैं।

१) कई फसल लगाने से हमें बाजार में कुछ फसल के दाम अच्छे मिल ही जाएंगे।

२) मिश्र फसल लगाने से प्राकृतिक रूप से कीटनाशक नियंत्रण हो जाता है और जमीन में प्राकृतिक रुप से पोषक तत्त्वों का प्रमाण भी प्राप्त हो जाता है।

इस तरह की कई तकनीकों का जिक्र इस कार्यशाला में किया गया। जैन इरिगेशन के कृषि विशेषज्ञ संजय सोन्जे ने अपना बहुमूल्य समय दे कर इस कार्यशाला में उपस्थित किसानों के सवालों के जवाब दिए। फाउण्डेशन के मेजर डेविड जेबराज ने किसानों को आत्मविश्वास प्रदान कर उनका हौसला अफजाई किया।

इससे पहले समूह खेती के लिए किसानों को जलगाँव स्थित जैन हिल्स पर अभ्यास दौरा निकाला गया। इस अभ्यास दौरे में किसानों ने सामूहिक खेती के महत्त्व को जाना साथ ही साथ मिश्र फसल की खेती के पदार्थ पाठ प्राप्त किए। फाउण्डेशन के कार्यकर्ता सागर चौधरी, चंद्रकांत चौधरी तथा गणेश चाफेकर के मार्गदर्शन में इस किसान समूह ने जलगाँव स्थित आत्मा प्रकल्प के साथ संलग्नता प्राप्त की है।

पारंपरिक कृषि के तरीकों में बदलाव कर हम उन्नति की ओर कदम बढ़ा सकते हैं – सागर चौधरी

'कृषि की ज्योत जलाने, निकले हम युवा...' प्रत्यक्षीकरण के दौरान कृषि विशेषज्ञ का मार्गदर्शन

प्रशिक्षण कार्य में जुड़ा बिशप कॉलेज का समूह

हम सज्ज है विश्व शांति के लिए... हम बने है वाद्य विश्व शांति के लिए...

सफलतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद प्रमाणपत्र प्राप्त करते छात्र

सत्य, अहिंसा और शांति के मूल्य के आधार पर शाश्वत समुदाय स्थापित करने की दिशा में युवाओं का एक प्रशिक्षण हाल ही में १७ से ३१ अक्तूबर २०१९ के दौरान गाँधी तीर्थ पर आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में कलकत्ता से बिशप कॉलेज के चौदह युवा छात्र सम्मिलित हुए थे।

प्रशिक्षण में सम्मिलित युवाओं के लिए सुबह के सत्र में गाँधी विचार आधारित विभिन्न अवधारणाएं, दृष्टिकोण और संकल्पनाओं पर विचार-विमर्श होता था। जबकि दोपहर के सत्र में क्षेत्र कार्य दौरा किया जाता था, इसके अंतर्गत गाँधी तीर्थ, अनुभूति अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, जल संधारण विकास आदि का समावेश किया गया। इन पंद्रह दिनों के दौरान युवा छात्रों को सहभागिता, गाँधी विचार, अहिंसक जीवनशैली, उपयुक्त तंत्र-ज्ञान तथा अनुकूलित दृष्टिकोण से अवगत कराया गया।

इस युवा छात्रों के समूह के साथ विभिन्न चर्चा सत्र तथा व्याख्यान में फाउण्डेशन की ओर से डॉ. गीता धरमपाल, मेजर डेविड जेबराज, डॉ. जॉन चेल्लदुरै तथा अश्विन झाला ने अपना बहुमूल्य समय प्रदान कर उपरोक्त विषयों को प्रस्तुत किया।

इस पंद्रह दिवसीय प्रशिक्षण पर युवा छात्रों ने अपने अभिमत साझा करते हुए निम्नलिखित प्रतिसाद दिए।

निकी लिंगदोह: इस प्रशिक्षण ने मेरी सोच और समझ को एक स्तर ऊपर उठाया।

अजिनो गॉडफ्रे: परस्पर संवादात्मक सत्रों ने हमारी समझ को अधिक स्पष्टता प्रदान किया। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन टीम का सहयोग व उचित मार्गदर्शन से कई सारी प्रेरणा प्राप्त हुई।

एडविन सहराजा: यह प्रशिक्षण हमारे कॉलेज के प्रत्येक छात्र के लिए अनिवार्य होना चाहिए, ऐसा मुझे लगता है।

इस निवासी कार्यक्रम के दौरान बिशप कॉलेज की टीम ने फाउण्डेशन द्वारा प्रदान किए गए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की है और कहा कि ऐसे ही प्रयासों से हम इस दुनियां में न्याय और शांति को कायम कर सकते हैं।

किसानों को नि:शुल्क गोदान

वाडी प्रकल्प को मजबूत करने के लिए तथा जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसान के पास मवेशी होना फायदेमंद बन जाता है। इससे वे दूध भी प्राप्त कर सकते हैं और गोबर से खेती के लिए आवश्यक जैविक खाद्य निर्मित कर सकते हैं। इस प्रकल्प में जैन इरिगेशन ने अपनी गोशाला से देशी नस्ल की करीब ३० गाय नि:शुल्क प्रदान की है। यह सभी गायों को शेणपाणी तथा वैजापूर के वाडी प्रकल्प के साथ जुड़े किसानों को दी गई है।

डॉ. भवरलाल जैन द्वारा स्थापित किसानों के हित के लिए कार्य करने वाली जैन इरिगेशन के प्रति हम अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिन्होंने नि:शुल्क ३० गाय प्रदान कर किसानों का सम्मान किया।

ऐसे प्रयास के आधार पर हम साथ मिलकर कृषि को नई दिशा की ओर ले जा सकते हैं। शेणपाणी और वैजापूर गाँवों के किसान इस बात की मिसाल बन रहे हैं।

वैजापूर से...

हमारे पाठकों को स्मरण होगा कि चोपडा तहसील के वैजापूर गाँव में महिलाओं ने सामूहिक रूप से मशरूम उत्पादन का आरंभ किया है और प्रशासन की ओर से इस समूह को पचास हजार की राशि का पुरस्कार भी प्रदान किया गया है। इस बात का जिक्र 'खोज गाँधीजी की' के सितम्बर माह के अंक में किया गया है।

यह महिला समूह केवल वहाँ तक नहीं रुका बल्कि मशरूम उत्पादन प्रक्रिया को तेजी से बढ़ाया है और विपणन के लिए एक व्यवस्थापन बनाया। चोपड़ा एवं स्थानीय स्तर पर मशरूम को इतना मशहूर बना दिया है कि मशरूम खरीद ने के लिए लोग वैजापूर में आने लगे है। इस गाथा को बढ़ावा देने के लिए इस महिला समूह के साथ कई लोगों का संवाद कार्यक्रम भी आयोजित किया जाता है। हाल ही में फाउण्डेशन में इंटर्नशिप के लिए जर्मनी से तीन छात्रों ने महिला समूह के साथ संवाद किया। इस बात से जर्मनी के छात्र बेहद खुश हुए और महिलाओं की मेहनत तथा फाउण्डेशन के प्रयास की सराहना की है। इस पूरे संवाद में फाउण्डेशन के मेजर डेविड ने अनुवादक की भूमिका अदा की।

प्रो. गीता धरमपाल द्वारा विभिन्न जगहों पर व्याख्यान

मंच पर उपस्थित मान्यवर

जाकिर हुसैन कॉलेज के प्रोफेसर समूह के साथ प्रो. गीता धरमपाल

फाउण्डेशन की अनुसंधान विभाग की डीन प्रो. गीता धरमपाल ने बा–बापू१५० के अंतर्गत गाँधी विचार दर्शन पर सितम्बर मास में दो जगह पर भाषण दिए उनमें दिल्ली विश्वविद्यालय की जाकिर हुसैन कॉलेज में 'Gandhi's Satyagraha as a Solution for Today's Problems' इसके अतिरिक्त इस कॉलेज के फैकल्टी सदस्यों के लिए "Revisiting Gandhi Today: Questions of Caste, Class, Gender, Religion and Environment' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

नई दिल्ली में राजघाट स्थित गाँधी दर्शन पर एक अंतरराष्ट्रीय कॉंफ्रेंस आयोजित की गई थी। इस कांफ्रेंस में Gandhi's Satyagraha: Towards Peace and Non-Violence in Contemporary Times विषय पर प्रो. गीता धरमपाल ने अपनी बात प्रस्तुत की थी। इससे पहले प्रो. गीता द्वारा Satyagraha: Gandhian Nonviolent Resistance - Its Significance and Relevance for Solving Modern Predicaments विषय पर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ नैचरोपैथी, पूने में व्याख्यान प्रस्तुत किया था।

रिसर्च फैलोशिप कार्यक्रम

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा आवासीय अनुसंधान फैलोशिप कार्यक्रम का आरंभ किया गया है। इस पहल में समकालीन समस्याओं और संकटों से निपटने के लिए गाँधीवादी समाधानों की प्रासंगिकता को रेखांकित करने के उद्देश्य से शोधार्थियों, विद्वानों का समावेश किया जा रहा है। फैलोशिप की अवधि ३ से ६ महीन की है। इस कार्यक्रम में अब तक चार शोध अध्येताओं का समावेश किया गया है। उनमें वरिष्ठ शोधार्थी डॉ. समीर बॅनरजी ने Compendium of Gandhian Thought विषय पर प्रारंभिक शोध किया है। अमेरिका के प्रो. मार्क लिंडले Gandhi as a Political Scientist विषय पर शोध कर रहे है। अजिम प्रेमजी युनिवर्सिटी की पीएचडी छात्रा नबीला काझमी का Strengthening Gender Equity in Girls' education based on Gandhian Principles विषय पर शोध कार्य जारी है। तथा टाटा इन्स्टिट्यूट के पीएचडी छात्र ऋषिकेश किर्तीकर Construction of Knowledge in Work-centric Education: - Case Study of a Nai Talim School विषयक शोध कार्य के अंतिम पड़ाव पर है।

इंटर्नशिप कार्यक्रम

फाउण्डेशन के अनुसंधान विभाग के द्वारा एक अंतरराष्ट्रीय छात्र इंटर्नशिप कार्यक्रम का आरंभ किया गया है। इसका उद्देश्य इच्छुक अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को एक क्षेत्र प्रदान करना है, जिसमें वे खुद को गाँधीवादी अध्ययन, ग्रामीण उत्थान परियोजनाओं के साथ–साथ पुस्तकालय विज्ञान, कैटलॉगिंग, हस्तलिपि संरक्षण और खादी उत्पादन, जैसे कई अन्य गतिविधियों में काम कर सकते हैं। इस इंटर्नशिप कार्यक्रम के पहले सत्र में जर्मनी से तीन प्रशिक्षु फिलिप रजलर, बेट्टिना ब्राक और तमारा गोइटे सम्मिलित हुए हैं। प्रो. गीता धरमपाल के मार्गदर्शन में इन छात्रों का ४ से ८ महीनों की अवधि में इंटर्नशिप चलेगा।

बेट्टिना ब्राक

जर्मनी के कोलोन विश्वविद्यालय में पुस्तकालय विज्ञान का अध्ययन कर रही है। भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी आस्था और आकर्षण ने आपको इंटर्नशिप के लिए भारत आने के लिए प्रेरित किया।

तमारा गोइटे

कोलोन विश्वविद्यालय में सूचना विज्ञान की छात्रा है। अभ्यास के अंतर्गत आयोजित इंटर्नशिप के लिए भारत आना उनके लिए एक सुखद अनुभव बना है।

फिलिप रजलर

लीपज़िग, जर्मनी से है। वर्तमान में, पुस्तकालय और सूचना विज्ञान और दर्शनशास्त्र की पढ़ाई हम्बोल्ट विश्वविद्यालय से कर रहे हैं। गाँधी विचार और ग्रामीण भारत के संबंध में अपने क्षितिज को व्यापक बनाने के अवसर के रूप में इंटर्नशिप पर आए हैं।

सेवा संस्था की मुलाकात

इलाबहन भट्ट के साथ सौ. अंबिका जैन, प्रो. गीता धर्मपाल एवं उदय महाजन

हाल ही में १३ से १६ नवम्बर २०१९ के दौरान फाउण्डेशन का एक वरिष्ठ मंडल अहमदाबाद के दौरे पर गया था। इस मंडल में अंबिका जैन, प्रो. गीता धरमपाल तथा उदय महाजन सम्मिलित थे। फाउण्डेशन के सदस्यों की मुलाकात सेवा के संस्थापक इलाबहन भट्ट से हुई। इलाबहन को मिलना हमारे मंडल के लिए एक असाधारण अनुभव बना। इलाबहन ने सेवा के मॉडेल के बारे में अपने अनुभव साझा किए। सेवा संस्था के कार्यक्षेत्र मुलाकात के अंतर्गत हमारा मंडल आणंद के एक गाँव में गया वहाँ सेवा के द्वारा हैंडलूम का कार्य चल रहा है। वहाँ के स्थानीय महिला बुनकरों से मुलाकात हुई, उन महिलाओं ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि सेवा ने उन्हें आत्मनिर्भर बनने और पारिवारिक आय बढ़ाने के लिए सक्षम बनाया। क्षेत्र कार्य मुलाकात के बाद सेवा के कार्यालय में बहनों से संयुक्त उद्यमों की संभावना पर विचार-विमर्श हुआ। फाउण्डेशन तथा सेवा का संचालक मंडल आगे की संभावना को विकसित करने का प्रयास करेंगे। इस मुलाकात से निर्मित फलश्रुति बा-बापू १५० के कार्य को गति प्रदान करेगा।

एक बेहतरीन अनुभव के लिए फाउण्डेशन का मंडल इलाबहन भट्ट तथा सेवा के बहनों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हैं।

पाठकों के अभिमत

*'**खोज गाँधीजी की**' पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत*

– संपादक

आपके द्वारा प्रेषित भारत की एक मात्र सर्वश्रेष्ठ पत्रिका 'खोज गाँधीजी की' प्राप्त हो रही है। पत्रिका में आपकी बुद्धि का कमाल शोधपूर्ण श्रेष्ठ सामग्री जो पठनीय संजोकर रखने व स्मरण के लिए श्रेष्ठमय है। जैसी पत्रिका का प्रकाशन आपके कुशल ज्ञानवान संपादन में हो रहा है, श्रेष्ठ है। प्रशंसनीय है। पत्रिका में जो लेख सामग्री पढ़ने को मिलती है खोजबीन ज्ञानपूर्ण जानकारी है।

डॉ. रामसिंह यादव,
संपादकीय सलाहकार – ऋषि मुनि, उज्जैन, मध्यप्रदेश

संग्रहालय के अभिमत

*'**खोज गाँधीजी की**' संग्रहालय देखने आए हुए अतिथियों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है संग्रहालय के विषय में कुछ दर्शकों के अभिमत*

– संपादक

'खोज गाँधीजी की' को देखा, अनुभव किया, पूरे समय सत्य ही दिमाग में घूमता रहा, महसूस होता रहा कुछ ऐसा होता है जिसे सिर्फ महसूस करना होता है। यहाँ का वातावरण आश्रम जैसा ही पवित्र है।

शैल बहन, परंधाम प्रकाशन, वर्धा

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

बिशप स्कूल, मुंबई
०७.११.२०१९

रवीन्द्र जाधव, आय.ए.एस. ऑफिसर, मुंबई
१६.११.२०१९

सेंट जोसेफ हाइस्कूल, चालीसगाँव
२३.११.२०१९

प्रो. शिवानंद कांबले, साहित्यिक, दुर्ग, छत्तीसगढ़
२४.११.२०१९

डॉ. दीपा भटनागर, निदेशक, अभिलेखागार विभाग, अशोका यूनिवर्सिटी, सोनीपत २९.११.२०१९

R.N.I. No. MAHBIL/2017/77584 / Postal Registration No.: JAL/421/2019-2021
Posted at Jalgaon head post office, from 2nd of every month, Date of publication: 28th of every month.

मोहन से महात्मा – चित्र शृंखला–३१

नोआखाली

दंगो के दौरान एक क्षतिग्रस्त मकान, चाँदीपुर, नोआखाली, नवम्बर १३,१९४८

महात्मा गाँधी दंगा प्रभावित महिलाओं के समस्याओं पर बातचीत करते हुए, नोआखाली, १९४८

काजिरखिल में शरणर्थियों को शिविर में भोजन की सेवा प्रदान करते हुए, नोआखाली, नवम्बर २०,१९४६

मेरी प्रत्येक प्रवृत्ति के मूल में अहिंसा है और इसलिए उन तीन सार्वजनिक प्रवृत्तियों के मूल में भी होनी ही चाहिए जिनपर अभी से अपनी सारी शक्ति इस तरह से लगा रहा हूँ कि लोगों को वह साफ दिखता है। ये तीन प्रवृत्तियाँ है। – अस्पृश्यता – निवारण, खादी और ग्रामोध्दार। मुझे जिस चौथे विषय के प्रति लगन है वह है हिंदू–मुस्लिम एकता। लेकिन, जहाँ तक इसके लिए कोई ऐसा काम करने का संबंध है जो लोगों को साफ दिखे, मैंने अपनी हार कबूल कर ली है। मैं जानता हूँ कि मेरे जीते–जी नहीं तो मेरी मृत्यू के बाद तो अवश्य ही हिंदू और मुसलमान इस बात की साक्षी भरेंगे कि सांप्रदायिक सद्‌भाव की अपनी तीव्र लालसा मैंने कभी नहीं छोड़ी थी।

– महात्मा गाँधी

Non-violence is at the root of every one of my activities and therefore also of the three public activities on which I am just now visibly concentrating all my energy. These are removal of untouchability, khadi and village regeneration in general. Hindu-Muslim unity is my fourth love. But so far as any visible manifestation is concerned. I have owned defeat on that score. Let the public, however, not assume therefrom that I am inactive. If not during my life-time, I know that after my death both Hindus and Mussalmans will bear witness that I had never ceased to yearn after communal peace.

- Mahatma Gandhi

महात्मा गाँधी एक नेत्रहीन व्यक्ति के साथ जिसने बिहार राहत कोष में दान दिया था, से बातचीत करते हुए, मार्च २६,१९४७

Printed Matter

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO:

Gandhi Research Foundation
Gandhi Teerth, Jain Hills, Jalgaon - 425001 (M.S.) India; Tel: +91-257-2264801

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव–४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला* (*पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)

प्रकाशन: २ दिसम्बर, २०१९